भारत स्वातन्त्र्य-स्वर्ण-जयन्ती ग्रन्थमाला-30

50

संस्कृत साहित्य : बीसवीं शताब्दी

राधावल्लभ त्रिपाठी

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्

भूमिका

संस्कृत साहित्य– बीसवीं शताब्दी के समकालीन संस्कृत रचनाधारा की प्रवृत्तियों, सम्भावनाओं और सीमाओं का यथासम्भव वस्तुपरक विश्लेषण है। आज के संस्कृत लेखन को लेकर आज संस्कृतज्ञों में दो दृष्टियाँ मिलती हैं, एक में उसे लेकर अत्युत्साह और अति रंज़ना से आविष्ट दृष्टि है, तो दूसरी में पूर्वाग्रह के साथ इस साहित्य को नगण्य मानने वाली उपेक्षा बुद्धि है। इन दोनों अतियों से बच कर आज हमारे समय में हो रही संस्कृत रचनाओं का आकलन अपेक्षित है।

संस्कृत में हमारे समय में प्रचुर साहित्य रचा गया है, पर उस पर व्यवस्थित और सूत्रबद्ध चर्चा नहीं हुई है। आधुनिक संस्कृत साहित्य पर कई विश्वविद्यालयों में बड़ी मात्रा में शोधकार्य पिछले दशकों में हुए हैं। इस विषय पर कुछ पुस्तकें भी संस्कृत या हिन्दी में छपी हैं, पर इनमें संकलन का कार्य ही प्राय: किया गया है। संस्कृत के हमारे समय के कुछ वरिष्ठ साहित्यकारों पर पुस्तकाकार अध्ययन भी प्रकाशित हुए हैं। इनमें विवरण बहुलता और प्रशस्तिपरकता का प्राधान्य है। पिछले दस-पन्द्रह वर्षों में आधुनिक संस्कृत साहित्य पर अनेक विश्वविद्यालयों या साहित्य अकादेमी जैसी संस्थाओं के द्वारा अखिल भारतीय संगोष्ठियाँ आयोजित की गई हैं, जिससे प्रबुद्ध वर्ग का ध्यान, एक सीमा तक नये संस्कृत साहित्य की ओर अवश्य गया है। संस्कृत कवि गोष्ठियों में भी कभी-कभी बहुत सप्राण या चैतन्य कविता सुनने को मिल जाती है। संस्कृत पत्रिकाएँ अब पहले से कुछ अधिक सक्रिय और भास्वर लगती हैं। नये रचनाकर्म के प्रति पंडित समाज में व्याप्त एक प्रकार की उदासीनता अवश्य एक खटकने वाली स्थिति है, जिसके परिणाम स्वरूप संस्कृत के नये साहित्य की समीक्षा और आकलन के लिये काव्यशास्त्र में नयी कोटियों या नये

विषयानुक्रम

	पुरोवाक्	(iii)
	भूमिका	(v)
1.	अवतरण	1-75
2.	आधुनिक संस्कृत साहित्य की उपलब्धियाँ : प्रमुख रचनाकार	76-173
3.	संस्कृत पत्रिकाएँ	174-188
4.	समकालीन संस्कृत साहित्य : चुनौतियाँ, समस्याएँ और सम्भावनाएँ	189-204
5.	आधुनिक संस्कृत साहित्य : नये प्रतिमान	205-213
	पुस्तक-सूची	214-253

स्तोत्र काव्य हैं, इनके अतिरिक्त **धर्माष्टकम्, ख्रिस्तुदेवाष्टकम्, भक्त्यष्टकम्** और **मोक्षाष्टकम्** भी पारम्परिक भक्ति या स्तुति के भाव से प्रेरित हैं। पर अवशिष्ट अष्टकों में **भारताष्टकम्, राष्ट्रनेत्रष्टकम्, भिक्षुकाष्टकम्** और **मोक्षाष्टकम्, चलच्चित्राष्टकम्, ग्रामाष्टकम्** आदि में शैलीभेद तथा विषय की भिन्नता के साथ समकालीन जीवन और समाज पर कवि दृष्टिपात करता है।

इसी प्रकार पुराण की विधा जन सामान्य को उद्‌बुद्ध करने वाली भारतीय साहित्य की अनोखी पारम्परिक विधा रही है। उन्नीसवीं शताब्दी तक पुराणों की रचना होती रही। इसी क्रम में डॉ. रमेशचन्द्र शुक्ल ने नवभारतपुराणम् लिखा है। पुराण ही नहीं वेदमन्त्र की विधा में भी नये विषयों पर रचना करने का अभूतपूर्व उपक्रम इस युग में दिखायी देता है। पंडित नवलकिशोर कांकर ने **राष्ट्रवेद** की रचना की है। **राष्ट्रवेद** के ग्यारह सूक्तों में राष्ट्रपति, गाँधी, नेहरु, इन्दिरा, कृषक, दिष्ट, अदिष्ट आदि देवता हैं। पूरे वेद में कुल 101 मन्त्र हैं। मन्त्रों की भाषा वह संस्कृत नहीं जिसमें व्यास, वाल्मीकि, कालिदास आदि से लगा कर बींसवीं शताब्दी तक के संस्कृत कवि रचना करते आये हैं। इस संस्कृत को तो कोई पंडित भी नहीं समझ सकता, यदि वह वेद का विशेषज्ञ न हो। गाँधी जी पर मन्त्र है–

अस्मे घा रद्धि नव्यसीं शेमुषीं च शाशद्‌महे तविषासः पृतन्यून् ।
देवाभि नो गावो अनूषत त्वा प्राप्स्यारमस्मद् ध्रुग्जनं गुहासु ॥ (6/3)

इस प्रकार की रचनाओं के पीछे संस्कृत में लिखने वालों की कदाचित् यह भावना रहती है कि रचना को कम से कम लोग समझ सकें, वह अधिक से अधिक दुर्बोध और गूढ हो। वैदिक मन्त्र द्रष्टाओं ने जिस भाषा में मन्त्रों का साक्षात्कार किया, वह उस समय जनता की भाषा थी। क्या ऐसी भाषा में भी साक्षात्कार सम्भव है, जिसका प्राचीन मन्त्रों के पाठ को छोड़ कर कहीं कोई भी किसी भी रूप में व्यवहार न होता हो, और यदि ऐसी भाषा में मन्त्रों का साक्षात्कार हो भी जाता है, तो ऐसे मन्त्रकाव्य की आवश्यकता और उपयोगिता क्या है ? क्या अपने आप को वैदिक

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान

56-57 इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी

नई दिल्ली-110 058